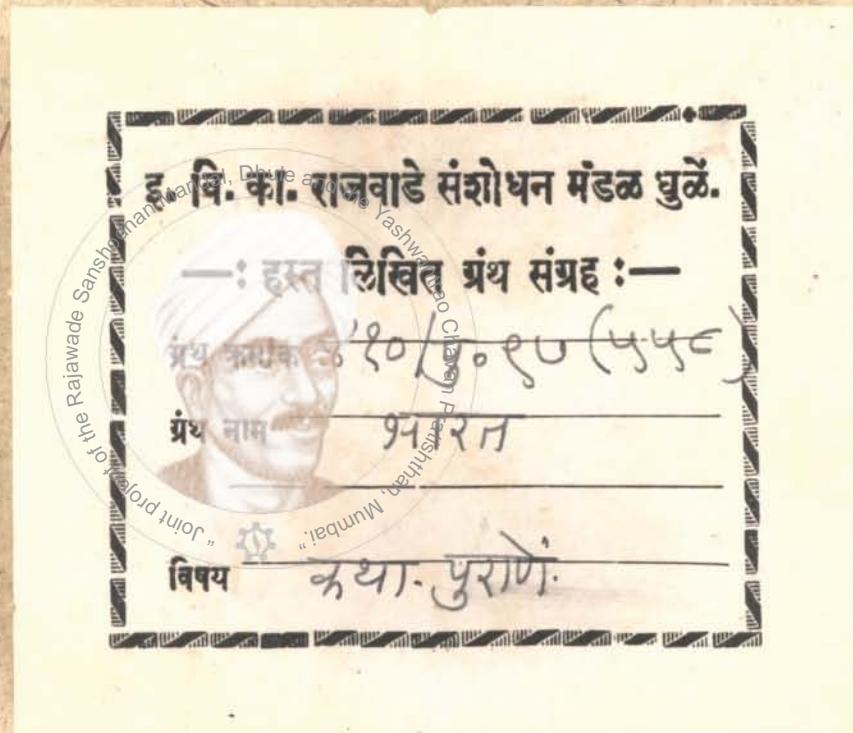


M. 90

महाराष्ट्र (अ०/१९४७)

890 /



श्रीरामसमर्थे ॥ श्रौनकादिभृत्यवी ॥ पवीत्रनिमिष्यारुण्येवासीग्न्युण
 तीयोराणीककैसी ॥ व्यस्तीका वीमुठकथाम् ॥ सौति क्लेणप्रसंगेवालें ॥ सों
 गणपाखाधीस्वामीनीषुसीलें ॥ अवडीत्येवधानकैलें ॥ सर्वद्वितुलीस
 वधाम् ॥ उरकारनमाद्राक्षुणाकरीतवसताएव्याटणा ॥ गत्तमिती
 अधोवदना ॥ विद्विगणदेविले ॥ अउविक्लीनेउद्गवरणा ॥ ज्ञातुनीती
 अधोवदना ॥ लोबतांदेसोनियापणा ॥ एसताऽज्ञातयासीमा ॥ उ
 ल्लिकवणकवणायर्था ॥ वीतीतांदेसोनियावस्था ॥ येरह्युणतीवर्षसांगता ॥
 श्रमहोईलभागवाम् ॥ उंजाजाला तंततीहीना ॥ पीतमांष्ठोमुरम
 पतना ॥ तेव्यात्मा सीप्राप्तमरनाम् गोक्काळेजालेसे ॥ इत्यरन्तुन्या
 स्वल्भाधार्ता वरणीदीसोसणपाण्युक्ता ॥ तोसंततिमाजीयेकनरा ॥ प्रे
 तग्रायउरल्लासे ॥ ३ ॥ तोहीग्रहस्ताश्रमवीरहीता ॥ नाहीस्त्रीनाएवाप
 स ॥ तापसीहोउन्नीतीर्थीतीर्थी ॥ अटणकरीवेराग्यें ॥ ५ ॥ ऊहीधर्सोनीस्त्री
 संगी ॥ संततीवाढतीजुगी ॥ तरी घामुन्वेवात्तव्यस्वर्गी ॥ असर्वहोतेंसा
 न्येनी ॥ ६ ॥ तणतेनुसीघारात्मा ॥ मुषकरवंडीतोदीसदांती ॥ तो

(2)

१

काळपैंसत्तु गती। अयुव्येहरीतया ये ॥७॥ पुससीतवन्देखभीथम्।
 तरीजरकारुरेसेजाण॥ एकुनीपुर्वजान्वंवन्वन्॥ सरब्बिजालाग्रहण
 स्थि॥८॥ लिणबवकालुरकम्बिमजसीसमंधठागलायत्या॥ पर
 मक्षेत्रमानुनीवात्या॥ वदतजालातयासी॥९॥ ल्लारेवडीलहोरेका
 तुल्ली॥ उररुरुरनामातोजामी॥ वीगतवासनासर्वकामी॥ वरीहं
 संकटसांगतसां॥१०॥ तरीमजसारीखीनामेंगुणी॥ खीदेसारीपवीत्र
 कोण्ही॥ कंन्पाखोपीलतेय॥११॥ करुनीग्रहस्तम्पोहोणो॥१२॥ डरे
 नेजालादेहेजर्डिरायलागीनामेरलारा॥ एसीयासीकंन्पासैवरा॥
 करीलकोणकबेना॥१३॥ तेहीनामामनलासरी॥ अणतअसतीलजर
 कारीणएसायोगघडेलतरी॥ लुमन्वन्वनहोसुरवो॥१४॥ एसेबोलो
 नीडाताजाला॥ सकबृष्टीझोधुनीवहीला॥ नागलोकप्रतीपातला॥
 रुटकेलामुखदाढ़ा॥१५॥ डरकारीयानामान्वो॥ कंन्पारतेबसेलेज्या
 न्वै॥ एमजापीसेलागीधालीतासान्वो॥ इष्टीलेफलतोपावेला॥१६॥
 रोसेवन्वनएकतक्षणी॥ वासुजीनेआएलीकर्गीनी॥ उरकारी

One can aware of Satyendranath Pal, Dileep and his Kashiwari research team
 about the history of the Kashiwari village.

करी धरनी। जर कारा दी धर्ला। १७। लणो तुज लगी हे वेहाका। रक्षा
 जी होती बहुत काका। आतां अंगी कम्मनी बीमका। अहस्त धर्म संपादी। १८।
 मात्रुदा पपरी हाशधी। उपववदला प्रजापती। याभागी दी धर्ली हा
 ती। आजी माझी वानुजा हो। २१। ए सें सांगुनी आदरें करी। वीधी नें
 वापिली डर क्लारी। एटें डनभाती चउदरी। अस्ती कनामा तपस्वी। २२।
 जन्म जयें सपेजावी तां। दृष्टि नें जाका तो इसी तां। वाणी पीतु गणा ही
 समस्ता अप्तपो व्यवें उद्गीष्ठी। २३। जात नै सप्तक्षापावया। जन्म जयें ता
 वावया। तजें व्यक्ती केर द्वावया। करण काण नीर्धीरे। २४। ए सें कल्पु
 नी छं तर्यो मी। प्रश्न करुं पह। २५। सातु ली। तसीर्षी हो ए कातं नी। सें क
 छी तसो गेना। २६। दक्ष प्रजापती याडु ही तां। कवय परस्त्री या कट वेन ता।
 परमपवीत्रपती व्रता। परीम्भु रुहो ही तो। २७। दो वेनें संतोष वीता
 रुषी। वर वो पीता ताला सासी। सह अखुन्न जन्म ती कुसी। ए सें कहसी
 बोली गाए। २८। बठी दृपवीत्रपरोपकारी। दो वेपुत्र जन्म ती उदरी।
 ए सें सांगुनी वेन ता करी। कुरवाकी जी प्रीता नै। २९। दार्ढी सो

(3)

वोणानीरेतदाना। कन्दपपगेलाभनुषाना। यथा काळें कहडाणास
 हश्रछंडें ब्रंसवली॥२४॥ तेजोमयदोनी छंडें। वैनताप्रसवली प्रस्वं
 डु॥। यामाडी अकणों आपी गरुडें। देहै धरी लाप बीक्राल०॥ वर्षेकर्म
 ल्यापांचनाता। सहश्र छंडें उल्लोनित थे। सहश्र संखाधु धुवाता। म
 हांसर्पनीपडले॥२५॥ क्रोधवासुगाल हीतसका। ऐरावत धनंजयक
 कटिका। काळ यामणी नागपंजरी का। येवापत्र इयादि॥२६॥ सर्पना
 में सागों नीवाडें। तरी ग्रथां तरी ये शील पुढें। असो सर्पनी जुंबाडें॥
 कहडाणी बीवाका॥२७॥ सवता रोनी पुन्नवंती। वैनताउतावेल
 पुत्राधि॥ संपुर्ण दीवसनकहां हां॥। छंडें येकफोडी लें॥२८॥ पुत्रपा
 हावयान्येच्याडे॥। अडें सेदु नीपाहालें कोडे॥। तवं अर्धकरीरन्यरणा
 कडें। नहित थेनीपडलें॥२९॥ कहडीपासुनीवरीलबांगा। अवेदी
 अकारलें संगा। मासोदकरीलभागा। लबथवीतराहीला॥३०॥।
 लणों कोपं पुन्न अरणा। मातेसीवदेशापवन्वना। सहश्र वर्षेन क
 तांपुरा॥। अडें सेदी लें पाणी क्षेत्र॥३१॥ जीवनी देखें अर्धकीवसी॥। अ

२

२

उर्वर्वेति लेनी दीर्घरासी पाती न्येवी घरी हो सीदा सी। सहश्रवयनं पर्यं
 ता ५८। आतां येक येक वन्नना। उस रे अंडे करी जितना। सहश्रवर्षं होता
 पुणे। अपेक्षा पठले भाग। ५९। यामाजी जने लगे श्वर। तो करी लब्रय
 लोम्बासी उपकास। दासी तुदापुरी हर। तो फैटी ल पैंतु ज्ञान। ६०। याप
 दी अन्नणा न्यौ उम्मी। तो पुढेसुर्य वासा रथी। जालाडया न्यिवांगदी पृष्ठी।
 सुंगदी से प्रभात। ६१। उस रे अंडे नी एक स्थानी बैठनी कह वैनता
 दोन्ही उच्चैश्रवापा हावया न यना। सुयेलो कापा त खान। ६२। उपन्या
 या सोंदर्यो जी कछा। घवं छता। ६३। और इत्तद्वा। कीर्तिक मक्की न्या
 कछा। इंद्रान्यि या नी धीरो। ६४। जानु उम्मी मध्यनी न्यानव नी तगो बु। ६५
 चाँक सोह दरनी मर्म बु। दृवी पुजो नी सुपरी मनु। एव्य माला वी ज्ञा। ६६
 नी टने ट केंगण मान। सर्वे लक्षणी न्यली संपुणे। उपान्यै न्यरु पी मनक
 पवना। अमासी तीन्य पवना। ६७। घवं लोकु नी वी श्वरमो। हृदय पुरु
 मी कें अश्वोतमा। रे रुदुन झाकेत या उपमा। कासु यान्यी यो जावी। ६८।

(5) यारीसहश्रन्यारीरातोऽयाशीयोजनेंवाधीकतेष्योऽनीमीष्यामाडी
दीनमधीतें।ज्ञानेत्सेनीरालेकी॥७॥ इौनकलुणेसुतनंदना।अ
च्छ्रवाखनपरह्यता।साव्यंसभुद्भयनींतनना।ज्ञालेंकैसेंसांगिजो॥८॥
सोतीलुणेमहांमुनी।सुचउद्दरवसभुद्भयनी।तेहीप्रज्ञेसारी
खंखरणी।नीवेदीनपरीयसांह॥९॥ श्रीगुरुवाङ्मादोष।सावरीइ
र्वसयन्यारोषा।तेणांइद्वासि वत्ताका।संपत्तीपडलीसागरी॥१०॥ त्री
दवादवाहीनज्ञालो।तेब्रह्मयतेवरणगलो।सातेवेउनिपातलो॥ १
मेनश्टुंगसमस्ता॥११॥ तेष्ये असर्वेसुवर्णसीररो।रत्नमणीवद्व
सरोकरें।नानागुहागवींग— श्रीद्रसाधकीवसवीली॥१२॥ ना
नावल्लीनानाद्दमास्वापदजलवर्वीहंगम।वीष्याधराव्येअश्र
मादेतीवरामपाहु।तया॥१३॥ नानासरीतार्गोभतीडीवनी।अ
मोब्यछलामान्वीयारवाणी।ऐसाकृकनकान्वदेरगोनी।रणीरा
वलेसुरवर॥१४॥ ज्ञोएष्वीडीगान्वीप्रीडीका।लुक्योजनेऊंवीदे
रवा।कुद्बाणीजीवीलामुमीका।वतीससहश्रयोजनो॥१५॥

तथेवे कुमीन्यामवो। देरताडाला सुरसमुद्राको। जैसावंकटावीं
 नहो। उक्तुमीयेन्याप्रसुस्तगः। उद्भुवर्णमेंपगहना। मणीमाणी
 कवीमुक्तमाणीसित्यसिना। मुवर्गिमुत्तिविशजमाना। इद्रनीबक्षीक्षव
 हिं। ५। सहश्रफलीवेस्वेतव्यामा। देरतांदीपलासहश्रनेत्रा। सहश्र
 कमर्वेसीक्षमवभीक्रा। प्रभामर्हो। पातला। ६। कनकन्येपगौरवणीमा।
 धरणीदुवदिवशामा। उक्तप्रभामीउभयरामा। कनकदेउटाक्षीती। ७।
 एसात्रयलोकीग्रहसुपक्षन् रेतीरडीलु। मदनडानकडागच्छा।
 नमस्कारीलासमस्ति। ८। समुद्रमवपरमयन्ते। प्रापुहोतील
 चौदारत्ते। अमृतडोडब्बा। प्रयत्नेत्रानुभव्यहरतीला। ९। दैष
 सवलकाक्षयण। सुप्रतीकार्यार्थसाम्यकरण। अभिभानसोडुनीम
 नें। १०। तथाप्रतीजाइडो। ११। कार्यसाधवयाच्येष्यथिं। उन्नीष्टेष्टव
 चायेभक्ती। मीथोरत्तेसानस्तिती। १२। तयेकाक्षीन्द्यरावें। १३। हीतस्वा
 र्याचीयेसीद्वी। आद्रमस्तवावेउत्तमपदी। उडाया। मुनीयहत्वा
 धी। १४। श्रेष्ठैपरीजाइडो। व्यन्योक्तीनेंप्रसंगाच्यतुरा। धारुर्व

कामसांगीडेभसुरा॥ पावरीअपीमानेंथोरा॥ कार्याभन्तुष्टीतीला॥ ६८
तथेंतुभन्तीपागीरक्षीता॥ मींबसेनतद्वता॥ ऐसेसीकुउनीअमरनाथा॥
स्त्रिअचुमधनाप्रेरीला॥ ६९॥ बठीप्रतीबालासहश्रनेत्रु॥ दैस्तुण
तीपुरातनद्रात्रु॥ वैरोचनीलुणोपरममीत्रु॥ इरणबालालुणनी॥
गौरठनीजामरगणा॥ लुणोपालातीत्राविरमणा॥ ध्यालाअससी
युकारणा॥ सात्युआनीसवेर्ख्यें॥ ७०॥ मधुनीसीअचुस्त्रियापोटा॥ अम्
तमननीसमानवोटा॥ नेमीलानेसनकरेत्तोटा॥ हैं-यीप्रमाणउभयता
॥ ७१॥ नीकुलुणोभीदेवद्वानवायक रमीबोनिपातलेसर्व॥ पात्रकेला
लवणार्जिकाएसलावयासा॥ ७०॥ रवियेसुंदरमंदरम्बद्वा॥ वी
धीनेमीलाबवक्रसरवा॥ पर॥ ७२॥ नीआणवयाववु॥ नन्यले
देवादेयत्यें॥ ७३॥ अकुरासहश्रवाजनेवरी॥ उंयवाठागगनाद
ई॥ सहश्रसंग्यानहीमाप्तारी॥ तीतुकान्विरंदवीतीर्ण॥ ७४॥ दे
वोदैसामृदरगीरी॥ नन्यलेदरगानोसहश्रधारी॥ सहश्रकीर्वा
अज्ञाकरी॥ अनेतातेष्वन्तु॥ ७५॥ धरणीधर्तुधरणीधरे॥ वेषुनी
आएज्ञावारीरो॥ उभकीतंप्रतापेयोरे॥ धरारीडीधराएष्टी॥ ७६॥

सहीतवनेंसीरवरेंसरीता। संरमाकैसीस्वापुद जाता। ऐसीयापरीपर्व
 तमाधो। वालनीआठाफुजगंदा। ७५। वेवीलाक्षीरनीधीवाणी शीणुंडा
 कीछावासुगीन्यादेसी। दैवादैयान्यियाहारी। अरीतेजालेदांभारी। ७६।
 वीष्मुसंकृतेसुरेष्वरल्लण। दैयुक्तालुजीपुष्टथरणो। येरल्लणती
 हीनांहीन। धरणोआन्नाभयोगा। ७७। उत्तमांधरीउत्तमांग। आन्नीन्नी
 सामर्थ्यंगा। मुराक्तिभवामुन्यापाग। अवश्येल्लणदेवंदा। ७८।
 दैयुक्तालुज्याकोटीपाड़। प्रोंगीनलुकुरवाक्तुंड। दैवल्लणतीवीष्मानका
 एउटे। वेगक्तेकेलुईष्वरे। ७९। यवरीयमरान्यथाटी। संरमात्रीदना
 ग्रीजीकोटी। एउटदोमातेकरता। कृतवेळीधावोनीवैकुंठपक्षा। कम
 वजालातक्कवटी। ८०। आदिकुर्मेकेढावेणो। वज्ञएष्मान्यकरनीनीव
 णो। गीजीझेलीलाइकर्षणो। वसुथाऊसीफणाग्री। ८१। उधर्दुलतां
 मंदरगीरी। एढतीकंवृक्तधारी। हास्तवेतुनीपर्वतसीरवरी। लो
 टबांगेअवरीछा। ८२। वेष्टीलाभसतांवीष्यव्याक्रें। वीवति

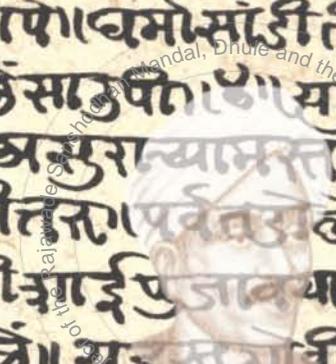
भावतांडडीबावकें॥ सुसीद्धपैनैवैकुंवपाकें॥ हासमाप्योरे दी
डेण॥ तयारीतोडगदेस्वरा। डोलतांकवक्षागीमंदरा। हेंदेखोनी
देसनीर्जस्ता। गुसछीतेजालेबादरें॥ ८॥ सबकदेशाखियावोही॥ प
डतीदेयाम्मामुरकुडी॥ सुरानदवतीबसुरपेडी॥ मध्येतउडीमुर्ज
गा॥ ९॥ वीक्रान्तहाकाफोडीतेमुरसें॥ पैजाघानीमाजीतीझोकेआमय
एउघार्थाचाँतुकें॥ जेवीताडवासुदली॥ १०॥ कांविकावर्णजीमंदरा॥ ११॥
कठीबंदतोयवक्षीखास्ता॥ वोटीतामनरकुंजस्तांडवक्षरीसुरवर
हा॥ १२॥ चुर्देवीधारत्टर्की॥ डाणोनीसुरअसुरश्रेष्ठी॥ कठीबंद
तोपक्षवस्थानी॥ धननीसेवा॥ जाणवीती॥ १३॥ नानामवार्णवतारकु॥
गीरीतोगीरीडेखानायकु॥ माउनीसुरसक्षीकु॥ कासेडैसेला
गले॥ १४॥ संवरीदेतामंदरस्थक्ष॥ संवोलागलावीरंझिजोक्ष॥ महलो
कसपुपाताक्ष॥ ताक्षतोडीतीफुक्षपें॥ १५॥ पोटरगडतांबाबाननी॥ अग्नि
डीहालागल्यागगर्जी॥ गरबवमीतासीधुन्येपाणी॥ कटोंलागलेंरबरव

(6)

८

वो॥१२॥ स्फुलिंगलागतां बुमाका यं त्रमुरवि पसरेवा का तेवी वो हीता
 संडीमाका वीक्षां नक्षरपदमाडो॥१३॥ तसु कनकर सान्यालोटा तेवी मुला
 श्रीकाळकुटा वर्षता दैयन्येसंघाटा इक्कोलगले याती॥१४॥ वीषमा
 श्रीतसीधोदकी॥ जलन्यरजा तीहो अनेकी। संकार लेतया लेरवी॥ महां
 प्रकई कोण्ठ पो॥१५॥ न संटत सागर तीवनी॥ काळ कुटुस ललेंगगनी॥
 तेणं अहेन्याभहवनी॥ पीषा उग्गलें॥१६॥ अंमृता स्थिरीता
 आज्ञा प्राप्त जाले पहीलें वीका यो यो मानुनीत्रासा महां देवता वीय
 ला॥१७॥ सोमलें हीसोहकाहका सपा वीसवजानील सककाहं देरोनीजा
 खनीका कैकासी हुनीधावीनला॥१८॥ तपार्ण वतोडगर संका वीक्षा
 लडाला वीषम संका। डौसाज्ञा तीनं सात्त्वीका। प्रबब को धखक कीडो॥१९॥
 नीरोपम हरवि खाला। श्रीवेसांट वीर गजस्थिगरीमा। तेणं श्रीवेपतली
 नीचीमा। नीक्क कंन याहेतु॥२०॥ वीषबाधाजामलीयावरी॥ अवधीं
 गडोनीजय जयकरि। वो हीतोडाले मंदर गिरी॥ परम अवेझोकरनी॥२१॥

वासुगीच्छानाशीकींतयनी॥सुसाटेधुमफरलागगनी॥तोमहांमे
घहोडनीधरणी॥वषेलिअलाभापारा॥अथुमांबरभाडीमुखवानी॥
मेघीजाल्यासोदामीनी॥तयेकडकडाटेध्वनी॥दीशाकुंडरबुताले॥५॥
जीशीवोटीतांदाटलेधापे॥वर्मसांडीतीश्रमस्त्वातपे॥स्थातेमेघवर्षी
आभापे॥सींपोनीकेलेसातुपी॥६॥समीप्रजन्यथारीदेवा॥एष्ववो
सेडीजालीस्तरा॥सुराभसुराभ्यमस्तका॥एष्वांजुरीवोपीडेती॥७॥
अठराभारवनस्तीतता॥पर्वतउलेफवसंभाहा॥सागरीसंडीतां
कमलावरु॥सीराव्यीक्षाईपुजावया॥स्वापदपक्षीयान्वेपले॥प
छतीलंधीतीछांतरावें॥अरुवीवीधमकावें॥अश्रीतपव
तीडगपरी॥८॥मंदरभ्रमणातस्तद्वें॥वर्णीपेटलाधुडथडाटे॥
दीव्यहमान्दीदांगेदाटे॥जबोलागडींवोफेरी॥९॥यावरीमहामेघ
वर्षतां॥बोष्ठीरस्त्वावीशाक्षसरीता॥सागरोदरीमीश्रीतहोतो॥
कौठकौसेंवर्तलो॥१०॥आगाधमहोदधीन्दीवना॥आतलेंधवव
कुधवषी॥एटतीपेटलाहुतारान॥ज्वालाधोवतीन्दोफेरी॥११॥सु



The Rajawali Sechuan and Mandai, Dhule and the Kharwado Chavan
Memorial Museum

वर्णवस्त्रीन्वेरसांनृताप्तात्त्वेयेऽनीमीवतांतेष्योऽपयलोएनीष्वप
 वंघृता कृतें जान्छेतेकाळीं॥७॥ मध्यीतोमेंद लेदेवदैषा प्रथाप्राप्त
 नकृतेष्यो॥ हृदेवगोनीकमलाकांता देताडालाबव इत्कीपरातेण
 होवन्वद छिदुजि उटतीरववव देशींधुमयनी॥ बापबाप रेसीयाक्ष्य
 नी॥ घेघेजान्छेलुणतातीपत्॥ तें घृतमध्यीतांरववववववाटी॥ त्रयोद
 वारत्तेंवनध्यमृष्टीकौतुकेयकमेमापावी॥ नीवतीजालींतेंरेका॥१४
 श्रीमोमकौसुभसारेंगज्ञारता अगडरंभापार्यतिका सुरसुरमी
 वैघपीयुष॥ वीषमारीलन्योदावा॥ धाकेबुकमवाकौसुभधनुदेउ
 नीदेवेषुजीलावीकृष्ण॥ वदीष्टवा॥ जीकासधेनु उच्चैश्रवासुर्यातें॥१५
 सिंधुमयनएवीभ्यकाळी॥ उसुमिनकृतीवीकृष्णजवली॥ एसावीक
 अवीवेककुञ्जाळी॥ कृञ्जीजेनासर्वधा॥१६॥ अर्यवन्यवान्येतजर्थो॥
 एसावीवज्ञातीसांगता कौतुकार्पीवोलेग्रंथा तोभावार्येपरीसीजो॥१७
 येद्वेषीलागगनोदरी॥ वौषधीपोसुनीतापनीवारी सुरभ्रमसं

८

न्नमकरी। लणोनी असुरीं नेमी ला। १९॥ रं भारभणी पारी जाता। ऐरा
 वत स्वेतन्य लुदंता। माझे लणोनी अमरनाथा। वसाहात धात ला। २०॥
 तवे भागुनी दै फी प्पमाना। ही बुमंडल करी धिं रुना। परमानुतो भरु
 नी पुर्ण। २१॥ धन्वंतरी नी घाठा। २२॥ तो युधार सदे रवतां दही। सकुण
 स्वार्थ सामी खपोटी। सुनावे सुरास्थिया आटी। उतावे बधावी न लो। २३॥
 माझे भाजे लुण तवरी। ऊडी यापडी जायक सरी। तेष्यं आंगदणा अ
 सुरी। २४॥ अंमृत कुम्हार तिला। २५॥ ग्रातवर्मन कलेप ही लें। देवीयथा
 धन्वी रक्की लें। व्यातां राहो न यें। उगवा। व क्लेहार जिले। अंमृता। २६॥ देव
 उगव लेडुं सामी। परी अंमृता। २७॥ तें असुराकरी। इं इह दय पीटी क
 री। काजना वाले लुणोनी। २८॥ उपालागी कळे लक्ष्मी बहुता। तेवे री हरी ले
 अंमृता। परमनवेद मानुनी तेष्यो। धावा करी दी कृष्ण चा। २९॥ ऐसे देरवा
 नी सुरीता। वी बुधवर वैकुंठ नाथा। मोहनी व वतार धरनी तेष्यो। प्रग
 द्वागातो काळी। ३०॥ मामा भुव पीरनी वत्सी नी। अनंत वाक्तव्यी

९

स्वामीणा। सुरासुर इरवता भयनाम वेदवाच्वावरयसीणा। गोंधकगा
 तीजीयेचा। २८। ब्रह्मादीक अडात बाले। गर्भीपालीमोहसमेळे। परी
 नुघडीचुडोळे। अपणातेंदेवावया। २९। जेब्रह्मसुरवाच्यांभृतोदथी।
 माडीवस्तुनीचारवोनेंदी। भुगउल्प्रायवीषयनदी। भ्रमेंभवीज
 गातो। ३०। असोरेसीवीस्वस्तुहर्वी। उब्रायेस्तिकुब्रस्वामीणा। सुरासु
 रदेवतोनयनी। पतंगप्रायदीपले। ३१। अवलोक्ताकुदर्पकोटी।
 सांडणेहोतसेवरणांगुष्ठी। वयलाकिलावण्याचीपेटी। देवदेवेंठ
 घडली। ३२। शगटदोदृतर्दीपी। रंगपाषाणहोतीपञ्चराग। स्मा
 तबोलतांभुतकीचांगा। रत्नरासावरकुरती। ३३। पायेरवीतोभुतकी।
 सुवर्णकमळेसहशृदकी। उगवतीतयेपरगद्युक्ती। माडीलोकेव
 संतु। ३४। तेचातुर्येपक्कक्कीका। सुंगारकासारमाकीका। नाना
 कैवल्यकनकलतिका। वैकुंगीठुनीउतरली। ३५। ब्रह्मांडकरंडपामा
 शा एवा। आगीचासुवस्तुधरवणेकरी। वेदकाळेचीतप्रभवी। यात्रे



बाणीसुवायंत्रै॥५८॥ अन्वापसद्गुर्नीभक्ति॥ सोहीताकृष्णान्वेबाणा॥
असुरीमृगीसांडीलेप्राणा॥ धैर्यव्याणीस्मरणान्वेबाणा॥५९॥ नानकृष्णा
यादुआक्ति॥ असुरसमुहोसप्तरजक्ति॥ मनोमध्येकेकाक्ति॥ वोहोनी
पासींगोवील्ले॥६०॥ बछील्लणेइन्नामुरवज्ञानगंका॥ चर्षेदर्जनीपीयुका॥
तथेंनाशेउभयोबक्त्वकारदाँदैलपैडालो॥६१॥ इच्छेलावंष्ट्येरासीउ
मपे॥ वोशाइक्रान्तीनयन्नमापे॥ सिंगमीफरीतांसाधपे॥ प्रभाणनोहेस
वर्थां॥६२॥ रूपैश्वर्यदेखतांडोब्बांदा सीसमानभासेकनका॥ आमुते
आंगीकारीतरीसकका॥ वज्ञानावलो॥६३॥ रमारंभाठोब्बादो
घी॥ देवींनेल्याभाषुलापागी॥ लुणेनीइश्वरेंव्याघ्नालागी॥ धाडीजी
हेवाटतसे॥६४॥ लुणेनीउरीलेअसादरै॥ व्यावधेभालेतीसामोरे॥
वक्षीतउसोदेरोनिकरें॥ येरीत्रतांतवीन्वारी॥६५॥ कुवणाष्ट्येनीस्वा
र्थी॥ कलहकरीतसांनीधाते॥ दैयसांगतीहृतध्वातें॥ देवान्वेतयेप्र
ती॥६६॥ वकुनीनेल्यासक्षवज्ञासंपुर्णपोषीलाभाषुलाखर्षु॥

The Rishivaidyanashtra Mandal, Dr. Dilip and the
Vaywanvad Chaitanya
Digitized by srujanika@gmail.com

सेरवीं अंगृताम्बाहेतु युध्मक रीतीयामुसीं ॥४५॥ मोहनी प्रियो अकमी
 दृष्टि मीत्रद्रोही कामलोपीदा। तुलांसी वाकु नीक पृथक जानेलं वापु
 लें ॥४६॥ यह करनी हासणा। सेरवीं नकरी तांस माध्यान। अपस्वधि व
 उनी मना। स्वेच्छावस्तुह प्रजिभागा ॥४७॥ अनुभिति नहाटो नीमंदा। सेरवीं
 पुढी लोरे वीती विशाढ़ा। तेष्व विकीर्ह प्रसीद्धा। कायेलागे सांगण ॥४८॥
 आतां दै सुहोये करे का। अंगृत डुले भाती हीं लोका वहुत मापें जो
 डुले देरवा। सीं धुमणी प्रयास ॥४९॥ श्रव डुले भडोप दार्थ ॥ यावरी
 सकलों सही अर्ता। तेष्यं यकें तां स्वधर्मा। वीरो धउपडो सहजत्वा ॥५०॥
 वीक्षा सधरी लुतुमन्वें वीता ॥५१॥ नीन्याकरी नये प्यो। इपासी पोगपडोप
 दार्थ। तो म्बिदे इनतयाते ॥५२॥ स्त्रीयन्ये वन्यन अनर्थ कारी। ऐसें मावाल
 जरी व्यंतरी। तरीडों दीसेल स्वहीता वारी। तें म्बिकी जो सर्वधाधा ॥५३॥ उ
 प्योग साहन मुर्ख लुब्धता। माया अज्ञो नीर्दयता। ऐसी यादो वावा
 पुकनी तां। त्रिणां नीउपेस्थान करवी ॥५४॥ अंगी कारी लहुत आपणा। ए

ए रेत्वादे संस्कृत मंडल, चिठ्ठी और लंगूली का अनुवाद
 विकास ने इस श्लोक का अनुवाद किया है।

(१०)

९

श्रीबल्ली-वीभनवासना। लुणोनीहुणेतुज्जियाक्वना। आर्थीनआग्नि
 सर्वस्वों॥५॥ वीवेकेंन्यायकीजोन्यतुरी॥ आमुन्दापश्चांवस्त्रीमानधरी॥
 बीस्त्रामुनीमुत्तीपकरी॥ अंमृतकुम्भदीयछार॥६॥ योग्यायोग्यपाहो
 नीजाणाकरविनअंमृतरसमोजना। लुसेबोलोनिसुरासुरगण॥
 हाकानीलेजवकीको॥७॥ बालानिभित्तावीर्धीत्रास्तती॥ अन्नेकरवि
 लींसक्काहाती॥ उेयबैसर्वाल्पापनी॥८॥ साखियाआदरें॥९॥ अं
 मृतकलशघेतनीहाती॥ अज्ञानसुरप्रती॥ प्रथमवाटुकवणोप
 क्ती॥ येथेनीरोपपाहुजो॥१०॥ ऐसबलतीनीयोतरा॥ आर्थीअंमृतधा
 वेंबरमरा॥ सुराषार्तींवोपीडाल्पुरा॥ नीकेलुणोमहांशक्ती॥११॥ ते
 अवसरीसीहकासुता॥ राहोकुटीकपरमधुर्त॥ मनीविनुमानीपैयेथं॥
 कपटान्यारदीसताहो॥१२॥ नीमंमुन्डछाव्यसुरजला॥ मोहनीनक्ता
 महावीष्णु॥ नीश्वयैदैसातेंरकुन्ता॥ अंमृतदेइलभमरातो॥१३॥ अ
 सोपोरीन्हींपोरीमाता॥ वीबुधवेशधरनीतेथं॥ पातछाआमरेस

"Digitized by
Rajivadeo Bansharan Mandal, Shilpi and the
Kalyan Prakashini
Digitization Project"

मे आंता। दांपीक देवांने पवो॥ सा। यं दसुर्यामा जारी॥ वै सलाक पटवेश
 धारी॥ न वीन्या इतां खं गृत करी॥ वाटीतां सुद लें मोह निया॥ ५६॥ पही
 लें घेत लें न सतां कोण्ही॥ अज्ञाने दीतां श्रेष्ठ डनी॥ रहोने मुखी घाली
 तां तरणी॥ आणि यं द्रेही लही लाप॥ दै सुलक्षण डाणो निनी॥ गुती॥
 करमं केतद वी भिन्न ती॥ वामताटोक वाय हस्ति॥ महामाया भोकली
 लें॥ ५७॥ पाहातां कर्ण ताटोक हलें॥ परीतं सुद चोन प्रेरी लें॥ तेणों रा
 हां च दी लें॥ सीर जौ सेव र चिदा॥ मृत कुउ सबतां गगनाता॥ नी
 घालें मुखे गर्जना करीत॥ दै सह लेहि समस्ता॥ मोह नीन केवी मृण्य
 हा॥ ५८॥ सह सां खं गृत नै दी॥ उ॥ ऐसं ये कतां हाहा कारा॥ प्रव
 र्त लेहाति यरा॥ हाती वं सवीती समस्ता॥ अं गृत कुल घेउ नीते पें॥
 इं त्रें पछ वी लाहा तो हाता॥ संग्रा ममाड भाव दमुता॥ देवा दै सुतो का
 जी॥ ५९॥ अरु ठेना नाव हनी॥ धास्त्रा स्त्रि केंश धरणी॥ युध्य हो
 तां अपार अवनी॥ सुरं गजाली श्रोणि तो॥ ७०॥ जय सी द्रिसिंहा



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com